

जे वं प्र वयोदश्याभूतवा। व्रामहानिशा शिवराविद्रनेत वक्ष्यीज्ञागरणंत या इत्येत द्वनिवरोध इतिनवाच्य ग्यस्वचनस्यमहानिष्ठाविद्याहाः किंदुनम्भनुनीजीवेधइत्येतद् यीविषयत्वात् नन्ववंविधोपवास्परे। क्रिवन्द्रश्योक्षित्वद्रविष्यक्षां प्राजीतिष्यंतः स्मात् ननम्निनिष्यंतेषारणं स्पात् नचायकम् पवासेष्ठिवापार एषिष्यते इति बचनान् तथाच अन्यतिष्यागमोराजीना मससे असे दिवा नाम्सेपार रात्री अकान पर्वरागित्यमा वास्या यो रात्रिभी जननियेथा धिकत्रसेष्वयाषिन्या र विविद्यायान हुर्वविद्यायान चन देश्याअपवासः परत्रपारण्निवेधादितिवेनोव अत्रविधिः निष्येने दिवस्त्वपार एं कार्यं ने था। कर्यात्पारलेनेव दोष्ठभाक इति उपाछणं चल्दंग पाचन र्रांग्ल भ्रम्यारण सिक्य सिक्य प्रमिध्स्यफनप्र त्रोतिमानव्दिति तथाचयोम् त्रयोद्विगामि न्यां प्रात्येवितियार्गिमिन्यादी निवेतिह्ययाण् अपित्यिक्। ज्यधिक प्रदेशिक्यापिनी च त्रियो प्रवासिक् इबीह्रवीद्वावारा औरोहिराप्रिनेवितःस रःशिवःपरोनिषपरिशेषन्त्रासावनिस्भितिन्त्रिति अस्याची प्रवीक्षिणपानपूर्वा प्रवंभागनपास्ना प्रवा र्य रिएगितितमां स्मी अग्निः प्रतिपत् विविद्तीका स्मरः अन्गवया स्था शिव बन दे प्रपं विशेषमा ह परःशिवः ऋग्निमिहेने चम्देशी निशिष्त्रिरियोन् नन्यनोभवेन बेन् नद्यि अतिहिने अतिहामानसादनः परेवकार्यत्य मोदेष्वरिवं अप्रपरान्दे अयो दश्यामनं तरे चनु देशी उपे से माग्रपरेन राजीकामवी धिनीति उभयत्रप्रदोषव्यापिनी पंचमीत् परेवोषवासेमान्या पूर्वविद्वातिप्राकी नदुक्तम् माघासितेभ

28 200 चुडामी 8 8 Accession No - Title Placet Folio No/ Pages Accession No Title -Lines-Size

Script Devanagari Substance Paper

Language

Period -

BAZING. समिंडी करणाह्दैयान्द्र ब्द्नययेन नुमिदैवन Beginning - अयोद्यममुत्रक्या प्रामहानिश् में कत्र चंद्राणाहेन कुदा चन अत्यक्षम् मार्थात्रक End -

Colophon-

Illustrations

Subject -Source -

Revisor

tegro Remarks-Author

200

जें बंग्प्र वयोद्ध्यांभ्रत्वा वामहानिशा शिवराविद्वतंत्र कुर्याज्ञागरणंत्र या इत्येत द्वनिवरोध इतिनवाच्य म् अर ग्यस्वचनस्पमहानिशावेधोषिग्राह्यः किंपुनम्भनुनिजीवेधइन्येतद् येविषयतात् नन्येवविधोपबासेष्रे क्रिवन्देश्पंकिचित्रदेषस्वर्शा प्राजीतियातःस्मात् ननम्भितियातेषारणस्यात् नजायकम् सर्वेखेवे पवासेष्ठिवापारएमिष्यतेइतिबचनान् तथाव अन्यतिष्यागमोराजीनामससैत्रसीदिवा ताम्स्पारण्क त्वातामसीगतिमात्रयादितिबचनाच्च रात्रोधकानुपर्वरगीत्यमावास्पायाराज्ञिभीतननिवधाचिति त्रुते। धिकप्रदेषिव्यापिन्या रहेविद्वायानु इत्विद्वायानु चन् देश्याउपवासः यरत्रपारणिनवधादितिचन्त्रेव अत्रविधि निष्योने दिवसएवपारएं कार्य ने यो ने लिंदी सालं मनपर्य ने व्यापिनी बेन्परेहिन दिवेवपारएं क्यां नारले ने ब हो खभाक इति उपो ब ल हं हर्षा च न हर्षा एक प्रत्या रात सिक्य सिक्य प्रति ध स्पूर्ण ने प्रे प्रतिमानव इति ने प्राप्ति ने प्राप्ति ने प्रतिमानव इति ने प्राप्ति ग्रियकप्रदेखव्यापिनीचन्धीन परेवोषवाहेगाहा स्वतिसंग्रेहे इबीह्वीक्रावारा विरोहिरपानवितःस रःशिवःपरोनिषपिश्रिन्त्रामा विनिधितदाने नि श्राद्याची द्वी सिष्ठियो न द्वी सिष्ठिय न द्वी सि श्रवी रोहिणीति तन्मा स्मी अमिः प्रतिपत् विविधिता सारः अनंग विधितीया सारः अनंग विधित्य सारः परःशिवः त्रित्रमिने चन्द्रशिनिशान्त्र विषेत्र नक्तोभवेतं वेतं तद्यि। त्रित्ति भितिसमानस्पदनः परेवकार्यत्यः मोद्याद्यतिवं वे त्रप्रात्ते वयो दश्यायनं तर्चन्द्रशी उपत्रमेनागायप्रेने रात्रोकामवी पिनीति उभयत्रप्रदेवस्यापिनी पंचनीत् परेवो प्वादेनान्या प्रविद्यानिप्रात्ती नद्दक्तम् मार्चासितेभ

गतिवनमित्यक्तम् नथाच्छं दे एवं दादशवर्षाणिशिवरात्रिभुषायकः यामं गत्रन्ते नेराक्रीम् नेतः स्वर्गमार हेन् शिवंचष्रजिवाचयोवारये दितिदिन जयसाध्यमिदं वतं म् । ज्यस्याम् गवयासकलाहोराजव्यापि। न्यानवित्रतिपत्तिः उदयादारम्यप्रनस्टद्ययर्थतं व्यानि हिन इयविनिन्या खेनीयान् परस्र वित्रानिस्मति पुराण्वचनानिभूयंते नेषांचित्रे धपरिहारायतनिहिमयभेदेनयावस्पाचाते नथाहि शिवराजिदिविधा अञ्चित्रच नत्र क्रियांनसंदेतः विक्रन्यनः सोदा पूर्वदिनएवयद्षिषवापिनीनिद्दतीये। दितीयरि नगवप्रदोषवापिनीनप्रधमिहिन र याचप्रविहिनेप्रदोषमिकिताप्रोतिहितीयहिनेप्रदोषं व्याना स्थानि ह हिनीयहिनेप्रदोषम् । याना स्थानिप्रविह्निन्द लं व यो अयत्र संपूर्णिप्रदोष व्याप्नीति प्रयानी अयप्रदोषं स्थानिप्रविह्निन्द लं व यो अयत्र संपूर्णिप्रदोषं व्याप्नीति प्रयानी अयप्रदोषं स्थानि ह अद्भ्यासहरू मधा नज्ञ कायो निवादः विद्वाभे देष्ठ प्रविद्विनगवप्रदोष व्या पिनी दिनीयसिनएव प्रदेशिवयापिनीचप्रदेशवयापित्वाहु में एवीपीय न हु के शिवयापि प्रदेशवयापि कोत्रेयः चनस्थेवनाहिकाधित्वव्यमाण्वात् वृद्दिनोधकप्रदेषयापिनीननीयान वृद्देवोपवा सग्नात् प्रदेदिनोधकप्रदेषयापिनीननीयान वृद्देवोपवा सग्नात् प्रदेदिनोधकप्रदेषयापिनीननीयान वृद्देवोपवा सग्नात् प्राचा अधकप्रदेषयापित्वात् उक्तंच माधकान्त्रान्यार्मध्यायाख्यिवचन्देषी अनेगनस्मा यक्तान्त्रीयास्त्रात्विक्रान्यात्वश्वित्रात्रियास्त्रिक्रान्यात्वश्वित्रात्रियास्त्रिक्रान्यात्वर्षित्र न्याच नेयोद्यप्ति विद्वान्यात्वर्षित्र नेयाच्या स्विद्वान्यात्वर्षयात्रिक्रान्यात्वर्षयात्वर्षयात्रिक्षयात्रिक्षयाद्विक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्यात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रिक्षयात्रयात्रिक्षयात्रिक्य

जो चं व प्रव माध्मास्य व्यतिविक्त शिव च न हिं शी जूने न हर्व हिन एवं प्रदेशिया विनी ने प्रदेशिया विनी ने भय तप देष्ठ्यापिन्यावते स्वीकार्य नन्त्र प्रदेशजानु रता हे हिन्य जित्र विद्या जित्र हो है हो स्वाप्त के स्वीकार्य नन्त्र प्रदेश के स्वाप्त गर्सयोगमपत्रेतीतिचेत् नायंसवेजनियमः नपानाईराजानु स्ता ज्ञयायोगेशिवरात्रिः एविविज्ञकार्येति वाक्यस्पन्नीतिथिः ग्रह्माबाहे ई जयायोगेपराकायोद्धार्थिकोष्टीः वृत्तिवलान्माघनत्रं स्पे पविद्योपाषा इत्यन्यार्थः माघन् ने एपना शिवरा नियागेने वनिर्देष इतिन ने प्रीर्थः तथाना प्रपास स्पाने भवता ते क स्पनागोर ने वान्य में सम्मान स्वान स्वा तिनियवयम् नन्याम बन्ष्येचन्द्रपानागरेण इजा दिकंस्यदिति बहुकालव्यापनीगास्रेतिवस त्यम् प्रदोष्ठेमावत्यामापृशिवरात्रिः पराभवेदित्योदिवजनैयामचनुष्येप्रविद्वापिस्रणीस्पादिति नस्पमिष्रजाजागरणादिनिर्वाधः रूप्रव्रतेषुचेन्यस्मादेषप्रदेषप्रदेषप्रदेषप्रदेशवयापिनीविशेषद्रतिनविविदित्याग्र धनानिपरविद्वाविधायकवाकानिप्रदेशव्यापिनीग्राह्मत्यादिष्ट्वम् के नथा एदोषव्यापिनीम्त्रतिथि र्रातिषाःपरम् उपाध्यासाप्रयानेन प्रदेशिनयदाकुतः माद्यासितभ्रतिसम्बन्धादिनदिके स्वरं माद्यां तर्द्शिद्सित्वस्य निम्प्रेषेति मानिस्न भ्रतनं ज्ञतिष्ठेरतः प्राक्रीड द्विष्टप्राते प्रावरात्रित

नदिनंहिराजन्वेतियोगंयिहिप्चहरण जयाप्रयक्तांन्त्नत्रक्यों अवस्पराचिष्ठित्तेता श्वस्ति नथाच शिवा गित्रविभूतांका मित्रविद्यंतिक्रिच नन्द्रविद्यंतिक्ष्याः स्वतंन्यात्रिक्ताः श्रान्तेवक्रतोने। प्रवास् उत्तरिक्तिक्तात्वम् पूर्वदिनेउद्योधितेप्यदिवदिवातिष्यंताभावेन्पाय्गास्भेनात् नन्वनापिसावस्तम् नगरिनमातिक्षेत्रविद्योक्षेत्रविद्योदिवदिवातिष्यंताभावेन्पाय्गास्भेनात् नन्वनापिसावस्तम् नपर्यनं यापिनीचे नपरेहिनोत्पाहिन्यायो हितिचेत्न अन्त्रपरिनेपिसंपूर्णप्रदोषया पितेनोप्वास् स्विधानात् किंचात्रव्रतेष्रदेशव्यात्रिर्वलवतीनतम्बद्धद्विव्यात्रानात्रयोदशीविव्यात्राम्धतः प्रदेशार व्याप्तिनेवनिषेधात्र्यादशीविद्वानिषेधोनिरवकाशः उभयनप्रदेशव्याप्नियापूर्वविद्वायामे वावकाशेल भने निरवकाशविधेवंशिन्वान् नीभयत्रप्रदेशियवापिनीयशिनपूर्ववापाव्या नथाचत्रस्वेवने स्पी सेनवनाडी धुरुति ब्राचिया विवर्ति विवर् विद्यानिवेधोनावकाशंलभने ऋतः पूर्वी क्रविवयएव अवकेश्विड् चाने नन्दिन६येपिप्रदेशवया। पिन्पापरित्तग्वप्रदेशवयापिन्पाचपरित्तग्वप्रदेशवयापिन्पाचपरित्तग्वोपवास्त्रतियद्ध्य नेनघाम् रमाधितम् यतोईरात्रादधस्नादुभयत्रबाईरात्रेणचनुर्दश्या ज्यायोगे पूर्वेवोपाषा गर्ड रात्राद्रईतिद्योगेऽपरोपोष्प्रित्यवस्याः ज्यात्रयुक्तान् नजानुकेर्यादितिनिषेधस्पचार्द्रग्तेत्रत्रयोदश्यायो गविष्यंचिमिति अत्रत्रमः पूर्विकष्वत्रयेपिषरेवोपोस्पादत्यवश्पमङ्गीकार्यम् पूर्णप्रदोषसापिन्याम् पवास्विधायकानां चास्पाविधायक वस्पमा एवाका बनात् अन्पषातिः सहिवरोधः स्मात् देधेवहनाव चनंकार्यमितिव्यवन्यविरोधपरिहारायान्ययान्यपन्याःईराजान्यरमाञ्चेतस्यववाक्यस्यविषयोत्र

अं चंड प्रड अंगरक् चत्र देशी गायुगबाहिनी वूर्वीपरावाकार्यी मात्व चत्र देशपानन कार्यावर्धाने गायुगददत्र रोवंपदम चन प्रतिवेपचक मिटं स्पत्र क्रियारी जलाविका न स्पत्र स्पतिव स्पति रेप्ते व ने देश हिला स्पति स्पत णनवात्रीतिपरत्रशिवमधिति नथा कृष्टाः चतु द्विपातथापृग्यापत्योः मुलकृष्टायोः योद्मैकनम्तीते ग्रेकं शिवार्चनवरः मुचिः यस्प्रमदयं स्नतं स्त्रयातिनाम् नुस्प्रसक्तं नस्वशिवलोकं चगर्थति अधिशव प्रताप्यक्रकिचिद्वान चत्र्याचानीपानगृत्ग्यं क्रमेनचा युगाहिप्रण्कालेषुयावज्ञी प्रावाचनम् व मविको एए ए निर्वह ने यस्प बार्व जी विशिवार्च नम् म ने व्यक्ति ए। वहः सह द्रोना व स्प्रायः आकारोनि गमित्यहिः एशिबीनस्पवीष्ठिका ग्रालयः मर्बम्नानालयनाहिन गम् च्यते लिंगपुराण अनेक जन्म सहि संभाग्यमाणस्वयानिषु कः समान्नोतिबेम् किंनरेलिंगार्बनाहिने किंन्रोरीप्रतिशिवनवाच सर्विद्रयप्रस क्रोपि विप्रक्रें सर्वेपातके संप्रयातिशिवंदिवितंगयीर्चयतेहिमः यवर्षेत्रातंसमध्यिएकदिनित्ंगार्चन सममनितिनेत्रेवाक्तम् मनसाविनवेद्यं प्रजिवेद्यं प्रविवस् अशक्ताना सिवाद्वेतस्वत्रेम् स्थ मे सनपात्रह्मायकोविनेकः सर्वपानकेः जियत्नोकमवाक्रोतिहेत्मेदेनस्त्रायः सङ्स्माराकृतिहेका। स्पताम्मयंत्रया कृत्वातिंगं सकृत्यं उत्ते कल्यायुने हिव पार्षिवं सर्वकामदिमित्यागमे स्करिकं बमतस् प्राण ग्वंस्क्राम्यक्रयान्याहिकपार्थिवन्या अभदारमंप्रवाषिराद्यमनिवर्नने अन्यहासिंगकरम अथवर्गिति कर्कशमितन इमितिस्य ने विचित्रकारीपंडिकारीने कि एन विधमेवर्गियं गेषि डिकंमानोनंमी नीमानहीनपिडिकंचनिष्ठिमितिहरिनाधिनवेधे नामदंचप्रश्नामे प्रनाक्रीडमानेपितिंगक्पीन्यो

CC-0. Gurukul Kangri Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रेपाद्यमेथकलप्रस् स्र्यांन्यमचेलायं कलाये कार्त्वे वित्रं प्रमाने प्राप्ति वस्ते स्वार्थित वर्षे प्रमाने प्राप्ति स्वार्थित वर्षे प्रमाने प्राप्ति स्वार्थित वर्षे प्रमाने प्राप्ति स्वार्थित वर्षे प्रमाने प्राप्ति स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार एण्डल्यने दिनीय हिने दिवापारगाय येष्ट्रि स्निष्यां नानभी नयस्वासे वो पोष्यासाय दाभवति नृद्य निष्ठाजाग रेशिवगतिः स्पादिति नयाव कृष्टाव्यमीसंस्ववीशिवरात्रिञ्चन देशी एनाः एवयुनाः कार्यातिष्यतेपार गंभवत् जनमञ्जीरोहिणीचशिवगत्रिक्तवेवच पूर्वविद्वेवकत्रव्यातिष्यमानेचपारणमितिच् अत्रापिदिवा निष्यंनेपास्पाकार्यम् अस्मवेत्रदिवानिष्यंनामावेषिहिवेवपार्एंकार्यं यानिन् पूर्णावेषोद्योगित्रयाम्मा त्रचन्द्रशी चन्द्रशुपवासीयस्त्रन्द्रयांचपारयेति हिक्ये सिक्ये फलनस्पनानेहंवरानन्द्रत्यादीति वाक्यान्यप्रमाणानिवहवाक्यविरोधानेगाने त्रवरितिवंधेषु उपल्लीपानीन्य क्रम् कातादरीकारिति। क्रिज्ञां सम्मादिषाक्रपान्त्रतेवारिविष्याणीतिनिक्तीनं उभयत्रप्रदेषिक्यापाने विष्याणीतिनिक्तीनं उभयत्रप्रदेषिक्यापाने विष्याणाना चचेचेत्रज्ञाचन्र द्याति उभेर ब्रतमा इपर्क म् बन्दि स्ति ज्याते ज्ञासम् । K CC-0. Gurukul Kangri Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जेम् चं अस्मिवित्रीव्रतंचवद्यमाणं भाइप्रशिमास्यां अधिविशेषः न्यचेत्रेष्ट्रिणमास्यायात्र प्रता विज्ञानत्त्रयुतायांचा द्य स्याचित्रवस्त्राहिद्यम् नधाबदेविष्यागा योणमास्यासमाकायां स्वेकामसम्ह्रये इत्रयस्हसाधा न्यकामिकंन्मनेफलिनिति विस्मिती चेत्रीवित्राप्ताचेत्स्यान्स्याचित्रवस्त्रदानेनसोभाग्वस्त्रवा मोतिति ग्रेंत्रेवब्रह्मपुराणे विशेष्ठकः महे वार्के ग्रेरीवाषि वारे के तेष्वेत्रिका तत्राम्ब मेधतंप्रणं हा नेनस्भतेनरः दानम् इयतां याति चित्रूणाचेवतर्षामिति अत्रव्यशान्गर्रिश्वारेष्ठमहाप्राणित्र सामेवदमनार्के एणारवलान्स्रान्भ्य ची लेवत्स्र कृतार्वन कल्भाग्मवेत् तथावितंगप्राणे चेत्रेमा मिसिनेपद्मेपंचदश्यायथाविधि दमनेनाचये हैवान युमीभूतयो इस्ते दित वायप्यारी संवत्सरक नार्चायाः सापत्याया विलान्तरान् इमने नार्चये है आविशेषेण स्दाशिवमिति इति हे जीनित्यः वैशाख श्रामामंग कृ सम्गातिनंद त्वास्वल पृथ्वी दान्फलमवा न्यान तद्रक्तयमगायाम् यस्तृक साजिनदेशान्यवर श्रेगस्यनम् तिलैः प्राष्ट्यवासी भः सर्ववस्त्रिरलं कृतं वैशाखायोणिमास्यान विशारवास्विशेषतः सस्मद्रगृहातेनस्शेल्वनकानना स्निदीपान्वता दतापृथिवीनावस्त्रापः इति विस्त्रिप कृषानिनित्निन्त्वाहिरएंपमध्सपिमा दहानियस्विप्रापस्वत्रित्रित्वस्वत्रित्रीत् विधिः विस्तरस्त्र रानग्रेशेष्ठ र वयः कत्प्तरी हानका डेच वेशा त्यामे विधिव द्वी जिये हासाणान्या त्रि रात्रमितः स्ताला क्रयाराष्ट्रयतः शविः गोरान्वायदिवा क्रयां सिलान्तो देए संयुनान हतार्राप्ति वेष्ठुनाने वस्त्रित्वाचयेन प्रीयनाधर्मराजेतिपितृत्वेवाँश्वतर्पयेत् । वजीवक्रतंपायेतत्वणादेवमं चित्र श्रयत्वाचित्रायः इति जावालिः अत्या वक्तं भं चवेशारव्या चित्रिय

नरः प्रापात्मानभने राज्यं सुर्वपन्तमकं टकम् अधनामा नि जेविभनाप्य भारतिवैदिकमंत्रेणवाजेनमः शिर् वायेति शिवस्प घटन रमंत्रस्पवामन् ऋषिगीय ती छदः शिवोदेवना हिम्मा ज्ञायात्रवे विनियोगः घटनरे लेव निष्क्रवर्यविहिनगंधप्रवादिभिः प्रतिवादिनिशिश्वित्वमर्वयेन प्रवीक्तालंगेषु इतिशिवरात्रिः।। चन्दरपो शत्रवधादिकमैकार्यम् नहुकं चनुईर्शणचनुर्थाचनदम्याचारिमईनिमिनवजनात चनुईर्शारानिवा रेणिस्झ्र रिवबारेणविस्झ्र अञ्चलीरिक्षपादनधादनेचवर्त्रयेत् सर्वज्याजाचवर्तयेत् ।विशेषतीवा यथा व योगिनीसा स्त्रात्यात् मीन स्पेक्रग्रहे च तर्रशिष्टिमा बोष्ठभास्यात् सर्वा सवत्रे दशीष्ठतिष यितनास्थिवः एज्यः।। १९ ।। दुर्गाद्यवाध्यायवरा भिद्यस्पुत्रेण्त्री चंद्रमसाकृते स्मिन् चंद्रप्रकारोष्ठितवं धमोनोचन्द्रशीनिर्द्यप्यकातः ।। ग्राध्येषोर्ग्यासीनिर्द्रायः योग्ग्यासीचन्द्रशीयनामानासावत्रीव्र ते ग्रान्यः पर्याः पर्याः नथा तथा हिसावित्रीव्रत विस्वेषया संवचनम् एविविद्यानकने स्मावित्रीव्रतिभिनिरः वोग्रं मासीमिर्ग्यानप्रशोनिष्वयंगाना एत तस्वित्रीव्रते त्रान्यपूर्णिमाया वस्वेवन्नवन्तम् स्तविद्यानकं विस्वानिष्ठां प्रतिक्रित्रान्यः पर्याः पर्य नेवादर्शः प्रणिक दोचन् वर्नायितामुनिम्नेष्ट्रसावित्रीव्रतम् नेमिति अनेनवर्ष्ट्रणिमाप्वविद्वेवप्रा तीयते अत्यानप्रतिषद्यमेव तथा बोक्रम् एकाद्यय्य मिष्णीयोर्गमासी बन्दंशी अमावास्पाततीया चता उपोध्याः परान्धिता इति अक्रपदे तिथिशी व्यायस्पामम् दितोरिविद्यति च यन्त्रस्त्र वेचनेत्र स्त्रप्राणे बवाक्यम् प्रतिपतं बमीभतसावित्री बर्ध्यामा नवमी दशमी चेव नापोध्याः परस्य ताइति यस्कार्। प्रमावास्पा प्रविद्यान पार्थि प्रशीमापरिद्या बनोपोध्यं तिथि पंचकिति ते ज्ञापस्य वित्री वृत्रीमापरिद्या वित्री विद्या वित्री वृत्रीमापरिद्या वित्री विद्या वित्री वृत्रीमापरिद्या वित्री विद्या वित्री विद्या वित्री वृत्री विद्या वित्री वृत्री मापरिद्या वित्री विद्या वित्री विद्या वित्री वृत्री विद्या वित्री वृत्री मापरिद्या वित्री विद्या वित्री विद्या वित्री वृत्री विद्या वित्री वृत्री मापरिद्या वित्री विद्या वित्री विद्या वित्री वृत्री विद्या वित्री वृत्री विद्या वित्री विद्या वित्री विद्या वित्री विद्या वित्री विद्या वित्री विद्या विद्या वित्री विद्या वित्री विद्या वित्री विद्या व णे चं द प्र हुकंया स्वल्वान अध्यायाना अपाक की आवण्या अवरोपि ह स्तेनी बिध भावेच पंच म्या आवणस्पत्रति अ रथ आध्यायाना मिति वहुवचने शाखा भित्रावेशा इहं बो स्टर्ज ने निवरने सिसमा चार्त्रा में हश्यने उपाक मिशि चा पास्तिकस्पशिषानधाप्यतः ज्ञावस्याग्नावेत अन्धावयतीनाधिकारइतिककीपधापादयः यद्वल चारणांनु प्रस्कत्योपाक ने लेकिका ने प्रवर्तिन स्थलना वारं विनाम् लेन हुए पते मावण के महत्तिराने रत्रपोर्णमास्पंतियोष्त्रावर्गीकर्मानंतर्छन्तर्ननंकियने तद्कं दुर्वान्ते वोधिकं कर्मस्माणविध श्रवकम् उ त्मर्नचमधाक्नापराक्क्दाचनेनि निर्नेन्त्रावलीकर्मक्र्यामावान्त्रातरेवात्रतंनकारम् खरे। तियोन्द्रतिपद्यांगोद्योगास् वैश्राव्योकर्मकर्नेक्त्वेव्यत्वापपत्तः चत्रदेशीविद्यायाप्रणमास्याञ्चावर्णकर्मन यान्भयविष्याणा इतिविश्व इयस्त्रदाये संत्रात्रेश्वावणस्याने वीर्णमास्यामिनोदये स्तान्कवीत्मात मान्त्रतिस्मितिविधाननः ननीदेवान्यित् क्रेवनप्ययेत्यभागसा उपाकर्मदिवेवोक्त स्वीरणम्बनप्रित्तम् कवीनवास्मणः क्राइवेदानिह्रवशाकिनः इतिभविष्योत्तरवचनम् क्राइमत्राभ्यदायकभणकर्मिनि नंत्रयमत्रयोगग्व नत्रतिवर्षम् यस्कृद्यानिकर्माग्य क्रिवेयन्कर्मकारिभिः प्रतिव्योगंनेताः स्प्रमीतरः माइमेववेतिपरिशिष्टवचनाने उन्धर्ननिमिनमाभ्यदियकं नभवत्येव एवसदाचारापिदृश्वते गरः। अज्ञास्त्रमनादिदेशिषप्रथम प्रयोग्एवन् ज्ञतिवर्ध इनोद्यस्त्रानन् क्रिमीनेति यत्रस्तान् विहितन् न्स् ध्याक्तिक भवतं व्याचयरिशिष्टे छे दो गिमितिनाः कुर्यः प्रातरीत्स् व वाह्नियां अपराक्ते सुपाकर्म प्रमा

नः निर्हिश्यधर्मराज्ञायगोद्गानकलमाञ्चयात स्वर्णातन्यके अनुबद्धार्याने विचवा नर्पये दुर्पात्रे स्वर्मात्र स्वर्णातन्य के अनुबद्धार्याने विचवा नर्पये दुर्पात्रे स्वर्णात्र स्वर्णात्य स्वर्णात्र स्वर्ण नैः कार्यस्तनमिछिद्भिः श्रेयः सर्वात्यनागृहे इतिवैशारवष्ट्रशिमानिः। ज्येष्टपूर्णमास्यानित्वरानमहाय त्रफल्दं अत्रोपानदोहिदानं वप्रासन् न्याचा हिज्यारो अविष्यानिस्य निस्य विश्वास्य न्याचा हिज्यारो अविष्यानिस्य निस्य विश्वासन्य न्याचा हिज्यारो अविष्यानिस्य निस्य विश्वासन्य न्याचा हिज्यारो अविष्यानिस्य निस्य विश्वासन्य निस्य निस् द्यान्योर्णमासंविशेषतः अत्रमधस्ययनेर्णतन्त्रात्रोतिनसंश्वदिति विस्तृपि ज्येसीन्यश्यमान्वतनस्याध वोपानत्रदानेन्नरोनराधिषत्यमात्रीति इति हेपष्टपूर्णिमानि आया हेपार्मास्यां चन्द्रेश्पां हुनोपवास्त जन्नभगवनारायणः एत्यः बल्डरारी बहुद्दश्यानुषाधाधयोर्णमास्यायतेष्ठिमिति नधाच प्रवाघारानि नायां अचारपं अन्तरोनो दिकार्यम् नथा विद्धः अप्रावाह्यामा वारप्रेनायामन्त्रपाना दिराने ने नदेवादाः यमानो ति इत्या वारप्रिमानि । अप्रावण वेर्त्या अवला विनायां साने वन् करा दिकं सामवेर अवले व कार्य नपाचन्न लिप्याण त्रावरणात्रवरो नेव पूर्व हपशिराहिरः ज्ञान्सामवेद तस्विकित्विवनाशनि हि धनरीवितस्तायां प्रविश्तन वेबहि ग्रानी धं श्रावरो माहित वह बीर्धि हुये हता संप्रमये दिस् श्रावयक ग्राम् स्रात्वान्ययसामानिष्ठ न्याविष्ठास्त्र वृद्धे क्रीडितवांच्या क्रवाने स्वतने स्व जनकी राच्य माम्याम् स्यकान्यापिन्पागृहसंक्रातिहोष्ट्रितायां ब्रीह्याद्योष्ट्रिप्राद्यमावस्ति उपाकर्मु वक्ता। स्रावणमास्यहस्तनस्त्र यक्तिवस्ति अपाकर्मान्य स्वावणमास्यहस्तनस्त्र यक्ति वस्त्र स्वावणमास्यहस्तनस्त्र स्ववानस्पन् त

CC-0. Gurukul Kangri Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

10

व

पु इत्सर्न्नान्नर दिनपूर्वभागमध्येकरग्यनः बीर्णनास्यागस्यस् वीद्यानं नरेप्रारंभी सि पूर्वान्वेदेवाना मिन पाकर्मगोद्देविककर्मत्वानाधान्येन द्वीन्त्रवकालः तत्रक्यानः ज्ञारवाध्यायनाम्नावरंपायोगमास्य अदय कालकापित्याग्रहसंक्रांतिदेष्यरहिनायाभित्याहिए बेमक अर्थायंत्रहत्यध्यायाः वेहासेषाम्पाक में प्रारंभसं कारमिकाभित्र भावएपंत्रावगीकमध्याविधिस्माचरेत् उपाकर्मनुकर्तस्यं कर्करस्पाद्याकरे सिं हरवावितिविशेषः धंदोगानामन्यथेवनक्षकविरोधः स्यात् हलदेशकापंचम्पाश्रावएपाश्रवएनचेत् गोभिनः पर्वरणे दिविके वर्यः त्रावरंगिते निरीयकाः वस्त्वाः अवरणक प्रस्तिसाम विद्न्यित केवले हाने वित्राष्ट्रकेवा रातेषास्त्रस्यान् सारेणव्यवस्या यहानुष्त्रावरणमाहिजीषधयानप्रहर्भवतिग्रहर्भको निहोबोवास्पानं प्रतिवंधकानरेणवाष्ट्रावणमासानिकमः नहाप्रोष्ट्रपंद्याकार्यम् प्रोस्पद्याभाद्रपद्यो। र्णमास्माम् तथाचमनः स्त्रावरणप्रोष्ट्रपद्यावाद्यपाकृत्ययपाविधि युक्तम्भ्यदास्प्रधीयीतमासानाग्रई वचमान ग्रावश्चनभाद्रपद्द स्त्रावरगहरूपंचमीनाग्रहणं वहुष्ठवपरित्राष्ट्रकारकास्वप ग्रंश्स्रोषध्र व्यक्तीष यलिसन्मारेन्नभवंतिचेत्र नरामार्परमासिम्नावरानतिहळ्न इति अत्रीवधोद्रवःसंत्रात्पादिराषा। गाम्यलवकः अर्द्वःपंचमामासायवाते अर्द्वपंचमाः उपाकर्मप्रभृतिसाद्री अपन्रामासान्तरम् अत्रा चेष्ठसाधायि विविश्वनेस्वाधायमधाय्नेत्रार्थः पंचाईमासान्यश्वाधीत्योत्सनिति विविशः पंचाईष श्राचिति हारीतावि अत्राईष्ठान्यासानित्ययपद्यः आषाक्षाकृतोषाक्षमिवश्यः तदाप्रधामासप्रज्ञप्य वस्पमाईपंचमास्त्रस्थात् तथाच आवशेग्रहादिप्रतिवंधकस्तिभाद्र प्रविश्वनेत्रस्वित्वामुपाकमीति कानभाद्रपद्योगेन्यस्थिनः शासिनावातिस्नियवाति। कानाम् वातिस्तिनामान् स्वातिस्ति।

CC-0. Gurukul Kangri Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमदीयाहिनइति खंदोगाः स्वविदिनः। हलनदी अध्यायाना मार्भे क्यो रेपिति। नद्वेविस्की नंक्यं प्र क्रतनात् श्रावणभाद्रपद्योहिले उपक्रमः एक्षमास्यविद्यतिनम् अव्यतिरेपक्मीपराक्त अत्रा पानः सानुनः गोभिलः अअध्यायानानुपाकर्येङ्गयान्ताने प्रानिके प्रवीन्तेनिवसर्गः स्पादितिवेदविदो विदुः ग्रयंनियमः समेगानामेव नद्येवान्व न्यावावावाया ह सेपरान्दे अपकर्म प्रयोग रत्ने नि। निवस्वपरिशिष्कारिकासुच पर्वलीहिषिके कुर्य इत्ले ने निरीयकाः वस्ताः अवले कुर्यर हिंमाति वर्जिने ऋगवएइति वाषाठः अत्राविक्रानः समयरवीत्रः स्विद्यमहर्त्रवययापिनिकर्मण्यत्रवर्णहलेब यज्ञेदसामगाउत्सर्न्नविद्धः उत्सर्गस्यका लात्र मिष पारस्करः वीषमास् स्वरोहिएंग्रामध्यमायांचा। क्कायामध्यायान्त्रेनेयनिति स्रावर्णायद्यमाकर्मकर्णतदोत्सर्जनप्रध्यमासंस्थाने स्रोतिषदिष्ट्वान्तेय दित्रीष्ट्यद्यानसमाद्यक्रका ज्ञानिपदिप्रानः कार्यम् नहुकंमन्ना प्रवेत् छद्यं कुर्योह्नेहिरुत्सर्जनिद्धनः माधा अक्र स्वायात्रेष्ट्वाके प्रथमेह निइति या जवल्यावि योषमास्स्रोहिएपाम एकाया मधापित्र जलाते धर संज्यां दुन्संगिविधबहिनः पोष्मासस्परोहिएपा मिनिरोहिएपा प्रकापामन्यस्पानियोग्र व्यकापा हराष्ट् जनानंतरमन्गह अलेथंदासिक्ष सपते वागानिपहेदिति इत्यत्मर्जनम् अपोपाकमंकालः उपक्रमेने यांतिषिम्मन्त्राप्य व्ययातिभास्तर स्मितिषास्कला त्रेयादानाध्ययनकर्मस्वित देवलेनादित्योद्यस्य विनासिष्यः संपूर्णनाभिधानात् उत्सर्जनानेनरप्रतिषत्मधोषिक्रियतेचे नविरोधः यागस्पन् प्रतिषत्ना

मिति किं जिल्परमत्येप्रानः षर घरिका चनदंशीहिनीयेन् जिल्ले वित्रे को एकां मासीप्रतिपन् एवंपचपंचाप्रात्र ए वंसमवेत्वयेएमान्यन तिथिहात्वं इति हिवाहासेन स्विविधेष्ठतिपादितम् अत्तेवेतत्वप्रतिमाति एतञ्जय हणध्ययनगृहस्यस्याविस्भवति अथाहशीनकः समाहनाब्ह्न वारिकल्पनयधाभ्योसिनरेययायद्रय किति इतरे ब्रह्मबारिए। वानी वेबीग्रहास्यः काल हे ही न्याकर्मिण्याक बीभवति नया बकात्यायनः जनकं काल हुड़ी साह पाक मी दिवा में एत उन्ने भिवे का दि हुड़ी ना नत् के बीयु गादि मु यन्न नक र्वप्रतिपाद। कत्रव्य भेगवं वने दशहरास्नी कर्षः वन्षेषिष्णाहिष्य वणक्षेत्र वस्या भेन दृष्ट्यादिन इति छद्रः गविषयं नेषाहिका न स्वाद्या कि हो विज्ञाने वहिः विषयं नेषाहिका न स्वाद्या कि हो विज्ञाने वहिः धरोगामिनिताः अर्थसन्सर्गेसर्वे धरमामिनिसंबंधः बहिने द्वाहो एतच्चग्रहणास्तर हु प्रवणाहीकार्य हरेरोष अते तथा स्वतिक्र उपाक में ब्रह्मं वितिक्षमा नामग्ये इविदः ग्रह्मं क्रांति दुख्य र सम्भवण्या वेषु संक्रोतो ग्रहणे चेवस्तक मृतके तथा गणका ने नक्ष्वी नवा र स्थव चो यथा अथा है । यस्य के। प्रविणक्षा दुविक्र या दुः खोगा का मयग्रला एवे तथा दिना तथः न नुषवे रिग्रहणे स्ति चया दुखी चतुर्द्श्या वास्रवलनत्वेग्रहलवेधद्वितत्वाह् क्वेर्पाकर्मनकार्यम् वेधस्रस्ता वृक्तेः यथा त्रपीद्रपादिताव र्यदिनानान्वकेष्ठच मंगर्नेष्ठस्थलेष्ठग्रहणेष्ठद्रस्ययाः घरमणिहन्नीयांनावधद्रद्रग्रहेस्तः एका दर्णादिनःशोरेष्ठन्थातः प्रकातिनः इति रवेडग्रहेतयोः प्रोक्तम्भयन्दिन हयमिति दिन्हय्यदर्गन। नरंच ज्यनम्भन हें रणमणिम्वण विवधद् वित्र वा द्वण कर्म नकार्यमि रवन्त्र उपाकर्मिण विधेदी वा भावान् यण निन्धेने मिनकेन के हो मयने किया सुच उपाकर्म किनाने ग्रह वेधो नविद्य ने इनुपा

CC-0. Gurukul Kangri Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मी नथाचस्रतिमहाणेवे यहिस्यां नशावणीपविग्रहर्वकां निद्धितं स्वाहणके ग्राम्भायां वेयां स्त्राविग्रह्मायां विश्वाहणके स्वाहणके विश्वाहणके विश्वाहणके वेयां क्षिणके विश्वाहणके स्वाहणके स्व मगानानुभाद्रहालयुक्तापंचनीहरूर्ववाष्ट्रीष्ट्रपदीहरूक्तिकोपाकर्गितिकोभित्वचनात् ब्रोष्ट्रपदीप्राधित्य। र्थः महार्ग्वः संक्रांनिर्गृत्वाचियदिवर्वितायते तन्मासेहस्तप्रकायायेच्यावातिस्थते वाद्तिस्र त लगुक्तायोपंचम्पायाकुर्वनेकेवित् निक्षेष्ट्रपंचनीहिसेनेनिनोभित्ववाक्यविशेधान् हस्न्देसामविदिन्दिन् प्रकृतिप्रप्रकृतस्माव्वेयर्थाच्याच्याच्याच्यावस्यातियोपच्यावाइत्ययंविकल्यापुकः रामच्याति सनेपिविषयमितिकेचिवर्गियंति गुन्पेबास्वेबान्त्रावरण्डे त्रापेवम्पामेवचेति तुरुक्तम् तथास्ति स्रावरणं प्रीश्पद्याचे त्यादिमचाहि बाक्यानां निर्धकां ने भवेत् न स्माहक् बाश्रावएं। यनु विदिन श्रोष्ट्र धदोगाः हसर्वेकप्रीरित आवाद्यांचोपाकृत्पधंदांस्पधीयेनेति ग्राजकि चिर्षाः आवाद्यात्पाकर्मप्राध्यापना मविविह्नं सर्व्यारबाधिक रशितिन्यायेनक विशायकाल विद्यायकाल नेवायकाल विद्यायकाल नेवायकाल नेवायक यजःशास्त्र नामे वाषाक्यामे वेपाकं मेवेदितवाम् वक्वां छेद्दीगानां चकामिष्ठित्रप्रात्वाविशेषे अप्राधाहे मा स्पाक मीविरध्या हुशीना दिति न दुक्तम् ने बामि विक्वि विश्वाविशेषे श्रेगग्राहक तथा निषेधामा वात सर्व शास्त्राप्रत्ययमे कं कर्म पारस्म विशेष्ध्य दिनिन्यायने बक्तमा हा बा स्पानन्मा सिश्रवण दे हिन्ने वा उपाक मेप्रा विः स्पान स्वापाने संविधित स्वापाने के कर्मा हो स्वापाने स्वापाने स्वापाने स्वापाने स्वापाने स्वापाने स्वापाने विःस्पान ग्रन्ययानेवाविहिनाकरणेनपुत्यवायः प्रसन्यत ग्रन्यवस्त्राधिमारवक्तं कसिम्रिहिनगृहस् कातिविनेकार्यकर्मणाननापे।नोक्तवंदति ग्रुवगृहस्कानिद्विनेपर्वण्याकर्मनिषद्वं नुनम्रोत्सर्वन कषिनर्पणस्पादित्यावदाने अविध्यतिग्रहणपानः कालेवधोपिनस्भवति ननवन्सर्गयित्यागस्र हविचिनन

वित्र व्याप्त प्राणियामणीयद्वित गाजाभवेगिष्ठिर संगम्धमासमेखनतं व्याप्त तवादं प्राम्पगीतवाद्यान्त्यसमीदाणादि वर्त्तेव नेतां वंधिमिनेतीत एत् इतंत्र तन्त्र प्राप्त वर्त्तेव नेतां वंधिमिनेतीत एत् इतंत्र तन्त्र प्राप्त वर्त्तेव वर्त्तेव नेतां वंधिमिनेतीत एत् इतंत्र तन्त्र प्राप्त वर्त्तेव वर्तेव वर्त्तेव वर्तेव वर्त्तेव वर्तेव वर्त्तेव वर्तेव वर्त्तेव वर्त्तेव वर्तेव वर्तेव वर्तेव वर्त्तेव वर्तेव वर्तेव वर्तेव वर्त्तेव वर्तेव वर्त गे वस्तामवतारायशानेनारात्म् नायच अधिददामिभीष्माय हो मवंशो ह्वायच व्याद्यप्रदानामाय संकृत्यप्रवा राधच अप्रजायमयादनंजलंभीष्मायवर्गणे इतिमेत्रज्ञवेणित्दामविधिनाज्योवणीवृतिन स्ववरंपितयमे। न्भाष्ट्रायज्ञलेच्द्यः व्रतमेनिष्ठपरमेमिल्यानेम् व्रतकृत्परमेखानं हरः प्राम्नानिष्ठितम् ॥इति न्भाष्ट्रायज्ञलेच्द्यः व्रतमेनिष्ठपरमेमिल्यानेम् व्रतकृत्परमेखानं हरः प्राम्नानिष्ठितम् ॥इति न्भाष्ट्रायज्ञम् ॥ उत्रयमार्ग्यज्ञमार्ग्यन्ति। ॥इतिकानिककृत्यम् ॥ उत्रयमार्ग्यन्ति। अत्रवानमिल्यन्ति। ॥ अत्रवानमिल्यन्ति। ॥ अत्रवानमिल्यन्ति। अत्रवानमिलयन्ति। अत्र यते बामनेच खरोब्राष्ट्रनरागावेः प्राकरानित्र जाविकम् सान्यं केषावप्रीत्येमा सिमार्गिष्ठारे छ। मार्ग शीर्ष कृत्यम् अष्य वेषकृत्यम् नहुकं महाभारते योष्ठमास् नको तेष्णक भक्ते नयः द्येत समज्ञे दर्भनी यभ्रमक्रोभागीचेत्रायते इतिपोवहत्यम् ॥ ग्राष्ट्रमाद्यहत्यम् त्राहिष्टः माद्यमास्यतिप्रत्यहं धनितिले ईला स्युत्रक्षारां वास्णानो जिल्ला दी वास्ति निम्बियो ने रेव योगी मास्याममायां वाष्ट्रारम् चरेत विशिष्ट्रिनानिप्रापानिमकरस्येदिवाकरे अप्राष्ट्रतशारीराज्यः किष्ट्रिन्तानमाचरेत् पदेपदेश्वमधस्यक तंत्राक्षातिमानवः ग्वंस्नानावसानेभात्यंद्वयमविवादितम् भाजयद्वितदंग्वतंभ्रम्भयन्वस्रम् धरोदितिवाम् निष्ठाम् मान्यदितदंग्वतंभ्रम् धरोदितिवाम् निष्ठाम् मान्यदितदंग्वतंभ्रम् धरोदितिवाम् निष्ठाम् मान्यदितदंग्वतंभ्रम् सान्यदेश्वास्त्रमाध्वत्रीमानायव कोग्रांतिसर्ववारोति निष्ठाम् मान्यस्त्रमाध्वत्रीमानायव कोग्रांतिसर्ववारोति सम्प्राम् सम्प्राम् साम्प्राम् साम्प्राम साम्प्राम

न्हसस्याये एउनमम् विस्न लेक मुवानातिभन्नाम्पर्यातनार्दनम् पयो वेत्वानिपत्राणि स्राणलक मलानि च सप्त म्णाहोन्यः हत्वाराकादेश्याम्पावसेत् कार्तिकस्यामले पत्तेलद्मीष्ट्रियम् व्रेशवंचसमभ्यच्येवेशवीगा तिमात्रयात् गहस्यावाममन्त्रवावनस्यावाधिभन्तकः कथ्रणकथ्मात्रातिनिहस्याः प्रमंपदम् अयमीष्मपंच कम् ब्रह्मपुराणेनारहः वार्च मयावर्षेत्रहरूनं समभ्यन्यनमाईनम् प्रराष्ट्रात्रव्रतेनेनन्तर्वयन्त्रफलप्रदम् नार हो भूग वेषाहभूगुलेशन सेक थि इत्या द्येनेक विवरंपरागनम् नतो भी ष्ट्रायक थितंन हेन चक्रपाणिना प्रश्नेद्यप्रस्पातेभिक्तियुक्तायमुब्रत एकाद्रश्पाप्रग्रनीयाद्वतं वेद्यदिनात्मकम् ब्रतीसान्वाविधाननमध्या क्रोजरंशतम् जुरुपानिलस्युकं धन्त्रीहीन्ख्यं ब्रती ब्रुंच्दरणमंत्रेण खाताकारेणकारयेत् अधिक्रावद्रना विधिः प्रथमितनेकमले हरे यादी प्रमयेन दिनीयेवित्वप्रजेतीन्त्री २ तृतीयेजाननंत्रानानिनेत्त्रीद्तेः तृती जानीप्रकादिभिनीभेड्ड संस्थायावत ततामालतीक्समेः शिरः संप्रज्ञेत इतिप्रतिमायाप्रजाविश्वः तज्ञेका दश्पां हिर्पत्रविवानिक्ति स्विचानं ज्ञेच द्रिपां हिर्पत्रविवानिक्ति स्विचानं ज्ञेच द्रिपां हिर्पत्रविवानिक्ति स्विचानं ज्ञेच द्रिपां हिर्पत्रविवानं क्रिक्ति स्विचानं ज्ञेच द्रिपां स्विचानं ज्ञेच द्रिपां स्विचानं ज्ञेच द्रिपां स्विचानं स्वचानं मिह्रपत्राल्णान्यकान्त्रेनभोतयेत हसपां इवभीष्मार्थं च एपक् भाजयेत स्प्रप्यं च स्विपि हिने खित्रोषमा ह ने सामाका च ने द्यात्र हा द रपा व समुन में गोदाने च त्रयो द रपारिका या छ तपायस्य सिनासिन तिथीला जे चंडप्रस्विशेषद्ति माम्बिशेषाणामग्रहणेन वेकल्एंक त्यं माधेक त्यामिताहिकंव क्रीयेत जोतिः शास्त्र तम् १३४ दत्तमदत्त्रसाद्वतं त्वहतमेवच क्रत्र व्यामम्बद्धानीयवास् क्रितो मवेत् न्याचा नविवास्व नवास्त्र निवे शनम् न्यतिषाचेद्वानां प्रासाद्द्रामम्बद्धानां मास्त्रणम् नाहिराष्ट्रम् वासं सिकीरयेदिनिनिष्ठ्रयः पराशारः र्वि णालिंद्येतीमास श्रांद्रः ख्यातामितिक्वः तत्रयोद्दित्वर्तत्र म्रोस्कारयेत् शातातपः त्रस्ताच्यरो श्रके हुई बालेम लिन्स चे जनारमा पदिनो चिनक में निविधन गार्पः नामान्त्र प्रेशने वो लेखिवाहं मीति वधनं निष्कासं ज्ञानकर्माग्यकाम्यहबविस्जन्य उद्यापन्मपारभं वतानाने वकारयेत् नामसंका। लक्षतं जानकर्म जानेथिः नदार्गाग्यः नामकने चजात् विषयणाकालस्माचरेत् अधिमासेनक्षीत। अग्रासमिष्ठिएपताम् वाषीक्षतागादित्रतिश्यक्तमं च नक्षानाले मासेपिणरीष्ठके न यास्त्रो मास्प आधानयत्रकर्माणित्रायित्रितंत्रनानिच नक्यान्तनमासे विक्रकणवीरूपत्रतेवति प्रायत्रितं घरा शाद्य उत्रादि स्मतिसंग्रहे आरंभं हर्षा हर्ते स्वार निहा चार वाति संग्रह वित्र स्वार निहा ये वाति संग्रहे विवजीयेत इतिप्राधिमक दर्शपोर्णमास्यागादिविवजीयेत् प्रासंगिक उत्यते रविसानिध्यमन्येषा यम्णमस्त्रम्मेन नेनावीक्वाईकमे सार्ईवाल्यवकीर्नेनम् बालादिकालप्रिमागोव्हस्यित गह प्राम्प्रमाद्दितः स्वाद्धमादिना न्याप्राप्ता विषरीनंतृ वृद्धन्तं तह देवगुरोर विति प्राग्रहतः प्रि प्रस्वाञ्चवालो हुद्दी दशावंतिष्ठसम्भावम् वंगेष्ठहणेषु वष्ट्वपंचद्रभेवरोमेत्रिदिनंवद्तियदे वर्वतिष्य वर्तात्वार हिंहराशिगतोगुरुरसंगतद्वष्ठभक्मणावर्तः

१३५

बमीभयमुखादिमहादानंमहदादिशहेनगृहातद्ति मुझगुर्वलादावच्येतन्त्रिकेशः आदिपदेन तालत्व। ग्रहणम खंदपराणे ज्रमाहिदेवनां हुहा छ विः स्वीवस्थानि मिलम्बेष्यमावन तीर्षसाने विवर्त येन वापीक्षमहागादिप्रतिक्षायक्षकिन नक्षांनात्मास्थिमहादानव्रतानिवेति महाद्वागीन मत्येष्ठगरों मन् कानि नुलापुरुषिहिरण गर्भवृत्तां इकल्पाच्पगास्त्विहिरणकलप्राधे निह रएपोशहमहिमार्यवचलां पृथ्वी विष्यचक्रकल्य त्ना स्त्रमाग्रायन्त्रचे मृत्य द्वं तका निश्र उक्रमेण तेया निकृष्णे प्राणे दशका क्रमका क्रमिला ना ग्रामकी राष्ट्रा श्वास के के के क्रमिला देश क्रमका र महादाना निवेदशका कारकार से विद्रा में बीवंधनं च त्रा मों बीवंधनं च त्रा मां ये ये महत्य स्त्र मां ग्रामक क्रमें च निषा = यी झाने लियो ती अधिमा से नकर्ने वां आहं ना भुद्यं ने या ने ये वका मंय कर्म बस्रा त्रथमा होने सिपंडीकरणा हुई यिकं विन्वधिकं भवेत इस्वाय यवापुर्वन न्यू क्यांन्य मिन्द्रिय आभुद्य कं आहं मांगल्य ब्रेने ने रगत्जा नक मी दिनि मिने व्यति । कं प्रथमा देम नमा सम्बेयन्स पिडी क्रण मक्तम् तद्वनशितेचा भुद्धिकं नमलिम्ब बे कार्यम् वायत् काठक गृख्यिशिष्टे मने नांन्यगतिक यानिमा जियान सामयागादिक में लिनित्यान्य विमानिको चे उसीयाग्याणाधानक में स्पादिकान्य पि महान्यायका प्रोह्रे पाक्रमी द्विमेच स्थमा स्वित्रोवा व्यावहितं व क्रियेनमेले 5 भिन्ने ज्योग्रयणमा वश्यकजीवनायश्यामाकेरिषकार्यम् इभिद्याभावेश्यामाकेर्नकार्यं अत्यावश्यकत्वाद ल्पमेब अत्य व पेठीनिस् सं कातिरितमास्क्रियाय्यणं नचेति कल्पनरी महानयाभाद्रापरपद्मा

CC-0. Gurukul Kangri Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिम चंत्र खान दशमादीनवम्यपरमा गे न्त्रज्ञित्वन नी खड़ी व्यन स्विधियम तथा चेत्र स्व स्व सम्मादिहि १३६ ते खंबी ग्रह शेनो रवी मेळगते स्विभिण ने दश्र ह्यं चेत्र वेत्र न्त्रा बादिस हिरा हुती है। ब्रा वादेश व्या वित्र क्रिक्स क्षेत्र न्त्र स्व वित्र क्रिक्स वित्र क्र क्रिक्स वित्र क्र क्रिक्स वित्र क भवेत् नतोरवीमिणनस्पेसतिदर्शह्यस्यादिनियावन् नदाबादमासस्यिहराह्यनेरसो॥ हिमरूने ज्याया रो यणार्थः नपान्य यो हिराया रहनार्थः ज्यान वेजाया राज्यान स्वपंच खेकत्रमासिचेतिद्देशच एकसंकातीमी लाषाचा टएवन एवन एक संकाती दर्श हय वा गात्---- इत्यर्थः विविधः योयमुक्रोदिराया होनान्यः स्वादिधिमास्तः संज्ञाभेषात् एवोक्रीविकंशयनंहरे: दिराषा हा कि प्रसंग दिग्या हि विकल्यायं विक रुशयने प्रति उन्यापन्त्र अस्ति हिए वावति वृति कपमस्पहि रायना प्रतिमित्र गामिन्यपिवन्तरे दंदगवहिस्वापक कैरादिविकेयदि मिहिरः मेबादिनियने नेत्यदादर्शहर्षभवेत अद्यानरेनदावश्यमेकादश्याहरिखयेत अत्रव्यवप्रतिसंज्ञ मणिहन हुआस्यवयस्थान संधेयमित्यन वर्षम् ॥ ७॥ ५ ॥ ७॥ ५ मी सुणाधाय।

321

तथा नी चर्यवक्र संस्थास्त्र निचरणानेवाल दृक्तास्त्र गेवा सन्यासाय क्रयाजावृतनियमविधिर्य स्व मिरिचीला मोंजीवंधांगनानांपरिणयनविधिवीम् देवप्रतिश्व वंपरिक्रिस् शणितग्रोमि द्रापिस्थितवा उद्यापच्याव्रतवंधदीला विवाह्यात्राचवध्रवेशः तद्रागक्षित्रदश्र तिष्ठा वह स्थते सिह्या ते ने कुर्यात् गो स्व वरीया त्रा स्व ना विकार्य ती प्री वा चर्या या वा या प्रा के विकार के स्व के या बाष्यविहिने वेद्रितिष्ठशहमश्रीष्ठम् म्यू यो तथमा स्कार्याणे उपाकर्मान्स्ते ने वपवित्र। दमनाण्यगम् अवरोहम्रहेमतः सणीग्रीम्बलनाशकाः ईशोनस्विति हिमाः शयन्प विवर्तनम् ड्रॉइस्बापनेयामेस्मुत्यानं चवित्रणः पूर्ववप्रतिविद्राति परत्रानाचरे। विक्रम् उपाकर्मन्त्रारंभः उत्तर्जनसमात्रिः दिश्वारोधिनप्रधिमासभेद्राव नद्रक्रम् श्रीधमासप्रभेदोयं विराषाहो पिस्यमः इति सदिवाषा छ । किलहाणः इत्यं जातमा रीविः कृष्ट्रपविदेयः प्राप्ते विराषा छ हिवाकाः । द्विराषा छ स्वित्रेयः प्राप्ते क किरगा।

गुरुयोनम स्रीमिक मप नवंधन्यने संजीतियो स्वार्थनो वर्षेष्ठ ह हिसे विदिश्तिने भागि नेकार्त्रके एड़ावेच निहाल मिहन्यने विद्वान को रात्रवेगा विदेशित तेरवकर्त्त गरेच द्रव्याशाह्यः

सविजीकरणाद्वयावदस्त्रवंत्रवेत नावदेवनभोक्तं स्वया हैनकदा चन।।-





